International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 16-07-2022, Accepted: 01-08-2022, Published: 17-08-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 16-21

कश्मीर राज्यः इतिहास से वर्तमान तक सामाजिक और राजनीतिक व्यस्थाओं का अध्ययन

सुनील शर्मा, अनुराग पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, दयाल सिंह महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
कश्मीर का इतिहास बड़ा ही विवादास्पद रहा है, प्राचीन काल एवं मध्यकाल में यहां विभिन्न शासकों का शासन स्थापित हुआ जिनमें बौद्ध शासन, मुस्लिम शासन, सिक्ख शासन और हिन्दू शासन प्रमुख है। पहले एंग्लो–सिक्ख युद्ध के बाद ब्रिटिश शासन स्थापित हुआ जहां बाद में डोगरा वंश ने ब्रिटिश संरक्षित राज्य के रूप में शासन किया, आजादी के बाद राजा हरि सिंह ने कश्मीर राज्य का भारत में विलय स्वीकार किया और धारा 370 भारतीय संविधान में जोड़ी गई, जो कश्मीर को एक विशिष्ट राज्य का दर्जा देती थी, जिसे 2019 में निर्जीव कर दिया गया। प्रस्तुत लेख कश्मीर के राजनीतिक एवं सामाजिक परिदृश्य का ऐतिहासिक अवलोकन करता है। इसके साथ ही कश्मीर राज्य का भारत में धारा 370 के जरिए विलय और इससे उतपन्न विभिन्न समस्यायों पर विश्लेषण के साथ साल 2019 में धारा 370 को निर्जीव करने के निहितार्थों पर विस्तृत परिचर्चा भी प्रस्तुत करता है।

मूल शब्दः कश्मीर, धारा 370, अंगीकार पत्र, हिन्दू वंश, बौद्ध वंश, दुर्रानी साम्राज्य, मुग़ल साम्राज्य, सिक्ख साम्राज्य, हिन्दू डोगरा वंश, कश्मीरी पंडित, अलगाववाद

प्रस्तावना
कश्मीर भारत के सुदूर उत्तर का एक राज्य है 19 वीं शताब्दी के मध्य तक कश्मीर सिर्फ अपने एक हिस्से की वजह से जाना गया जिसे कश्मीर घाटी या सिर्फ घाटी कहा जाता है, इस घाटी में हिमालय और पीर पंजाल रेंज शामिल हुआ करती थीं, लेकिन आज का कश्मीर या घाटी में जम्मू, कश्मीर, लद्दाख के भाग शामिल होते हैं। इसी के साथ साथ 'पाक अधिकृत कश्मीर' (जिसमे गिलगिट–बाल्टिस्तान के प्रान्त भी शामिल हैं) और चीन द्वारा शासित अक्साई चीन एवं ट्रांस–कराकोरम ट्रैक्ट को भी इसी कश्मीर घाटी में शामिल किया जाता है।[1]
प्राचीन और मध्यकालीन कश्मीर हिन्दू और बौद्ध परम्परा का केंद्र था, इस दौर में इन दोनों धर्मो के मध्य Syncretism (समन्वयता) अस्तित्व में थी, बौद्ध धर्म के मध्यमाका और योगचारा हिन्दू धर्म के शैविस्म और अद्वेता वेदांत परम्परा के साथ मिश्रित हुए, इस Syncretism (समन्वयता) का श्रेय बौद्ध सम्राट अशोक को जाता है। बुद्धिज़्म के आने के बाद, कश्मीर घाटी बौद्ध धर्मावलम्बियों की संख्या बढने से मशहूर हुआ। बुद्धिज़्म के सर्वस्तिवाद का उस समय के कश्मीर पर गहरा प्रभाव था।[2]
अशोक के अतिरिक्त कारकोटा, उत्पला राजवंशों ने कश्मीर पर शासन किया, ऐसा माना जाता है के उत्पला वंश के अवन्ती वर्मा ने एक युद्ध में कारकोटा वंश का अंत किया।[3] आखिरी हिन्दू शासन लोहरा वंश का था, इसका उल्लेख राजातरंगिनी में मिलता है, ये एक कमजोर वंश साबित हुआ, इस वंश में सिर्फ कोटा रानी ही एकमात्र शासिका थी जिसने कश्मीर के उत्थान के लिए कार्य किये, कोटा रानी की दूरदर्शिता का ही परिणाम था के श्रीनगर में लगातार आने वाली बाढ़ से निबटने के लिए एक "कुटे कोल" नामक नहर बनवाई गई।[4]
कोटा रानी श्री रामचन्द्र की पुत्री थीं, जो सुहादेवा (लोहरा वंश के राजा) की सेना के सेनापति थे। रामचन्द्र ने लद्दाख के बौद्ध राजा रिनचेन को कश्मीर का प्रशासक नियुक्त किया, रिनचेन धोखेबाज निकले और सत्ता के लोभ में रामचन्द्र और उनके सैनिकों को धोखे से बंधक बना लिया, कुछ समय बाद रिनचेन के इशारे पर रामचन्द्र की हत्या कर दी गई और उनके परिवार को कैदी बना लिया गया। रिनचेन के खिलाफ लोग खड़े हुए लेकिन उसने रावनचन्द्र (रामचन्द्र के पुत्र) को लार और लद्दाख का प्रशासक बना दिया और कोटा रानी से जबरन विवाह किया। अपनी सत्ता को वैधता देने के लिए रिनचेन ने बौद्ध धर्म छोड़ कर हिन्दू धर्म अपनाने का प्रयास किया किन्तु एक कश्मीरी ब्राह्मण (जो शैव सम्प्रदाय के गुरु थे), ने रिनचेन को हिन्दू धर्म अपनाने नहीं दिया। रिनचेन सूफी मिशनरी से प्रभावित हुए और इस्लाम कुबूल किया, अब इनका नाम सुल्तान सदरुद्दीन शाह हुआ। इन्हीं सदरुद्दीन शाह की वजह से मुस्लिम शासन कश्मीर में स्थापित हुआ। इस्लाम कुबूल करने के बाद रिनचेन ने शाह मीर को अपना विश्वासपात्र प्रशासक नियुक्त किया और मंत्री पद दिया। शाह मीर के पुरखे भी क्षत्रिय थे और पंच्गब्बर घाटी (राजौरी और बूधायी के मध्य एक प्रान्त) के शासक थे।[5]
कोटा रानी से सदरुद्दीन शाह (रिनचेन) को एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम हैदर खान रखा गया। हैदर खान शाह मीर की सरपरस्ती में पले। रिनचेन के इस्लाम कुबूल करने के बाद कोटा रानी ने पुरोहितों की सलाह पर उदायनदेव से विवाह किया, इस विवाह से एक पुत्र हुआ जो भट्टा भिक्षना के संरक्षण में रहा। भट्टा भिक्षना को शाह मीर ने धोखे से मार दिया और इसी के बाद शाह मीर ने कोटा रानी के राज्य पर आक्रमण किया। कोटा रानी एक तरफ मंगोल आक्रमण और दूसरी तरफ शाह मीर के हमले से अपना राज्य नहीं बचा पाई और कश्मीर मुस्लिम शासक के हाथों में आ गया। शाह मीर ने सदरुद्दीन शाह (रिनचेन) के पुत्र हैदर खान के नाम पर शासन शुरू किया। युद्ध के बाद शाह मीर कोटा रानी से

विवाह करना चाहता था लेकिन कोटा रानी ने आत्महत्या कर ली और ऐसा कहा जाता है के शादी के तोहफे के रूप में अपने पेट की आतें मीर को तोहफे भेजी, कोटा रानी और उदायनदेव से जो पुत्र हुआ उसका इतिहास अज्ञात है।[6]

इस पूरे व्याख्यान में ये बात साबित होती है के पहला मुस्लिम शासक शाह मीर था, जो एक बौद्ध रिनचेन के इस्लाम कुबूल करने के कारण सत्ता हासिल कर पाया और जिसने शाह मीर वंश की स्थापना की, शाह मीर का शासन 1339 से 1342 तक चला, हालाँकि मीर वंश शाह मीर के बाद कई वर्षो तक रहा और इसी बीच मीर वंश ने कई मुस्लिम उलेमाओं को कश्मीर आमंत्रित किया और इस्लाम का प्रचार प्रसार करवाया, मीर वंश ने कई बौद्ध और हिन्दुओं को इस्लाम धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया और नतीजन हजारों लाखो लोग इस्लाम धर्म को स्वीकार किये, सन 1400 तक कश्मीर में इस्लाम फ़ैल गया, इसी मीर वंश ने पर्शियन को कश्मीर की राजकीय भाषा के रूप में स्थापित किया। मीर वंश सन 1585 तक चला। सन 1585 में मुग़ल सम्राट अकबर ने मीर वंश का अंत करके कश्मीर पर अपना शासन स्थापित किया।[7]

मुग़ल वंश ने 1585 से 1751 तक शासन किया और 1751 में दुर्रानी वंश ने मुग़ल सेना को हराकर दुर्रानी साम्राज्य की स्थापना की। दुर्रानी शासन ने मुस्लिम, बौद्ध, हिन्दू सभी कश्मीरियों पर बहुत अत्याचार किये, टैक्स की राशि कई गुना करी गई और आम कश्मीरियों की हालत बद से बदतर होती चली गई। दुर्रानी वंश का शासन सिर्फ कश्मीरियों पर अत्याचार के लिए याद किया जाता है। दुर्रानी वंश ने कश्मीरियत को तार तार किया और एक आतताई शासन की स्थापना की।[8]

सिक्ख शासन

सन 1819 में सिक्ख राजा रणजीत सिंह ने कश्मीर पर आक्रमण करके दुर्रानी शासक को हराया, रणजीत सिंह को कश्मीर की आम जनता का पूर्ण समर्थन मिला क्यूंकि दुर्रानी शासन आतताई था और कश्मीरियों ने ये उम्मीद करी के रणजीत सिंह सुशासन लायेंगे। लेकिन सिक्ख शासक दुर्रानी शासकों से भी ज्यादा अत्याचारी निकले, सिक्ख शासन घाटी में दमनकारी साबित हुआ। सभी कश्मीरियों के लिए, जिनमे मुस्लिम, हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख सभी शामिल थे। सिक्ख शासकों ने जनता पर लगने वाला टैक्स दुर्रानी साम्राज्य से भी ज्यादा किया, जिससे कश्मीर की जनता पर बोझ कई गुना बढ़ गया और सिक्ख शासकों के राजस्व में कई गुना बढ़ोतरी हुई। सिक्ख शासको ने मुस्लिम्स पर कई तरह के क़ानूनी प्रतिबंध लगाये, जानवर हत्या के लिए फांसी की सज़ा, श्रीनगर की जमा मस्जिद को बंद करने का आदेश और नमाज अदा करने पर पूर्ण प्रतिबंध, अजान पर प्रतिबंध, तीज त्यौहार का सार्वजिक क्षेत्रों में मनाने पर प्रतिबंध इत्यादि।[9]

सिक्ख शासन के समय ही यूरोपियन व्यापारियों का आवागमन शुरू हुआ और कश्मीरी शाल विश्व में प्रसिद्ध हुई, सिक्ख शासको को यूरोपियन व्यापारियों एवं स्थानीय व्यापारियों से मोटा टैक्स मिलता था। सिक्ख शासन पूरे जम्मू–कश्मीर–लद्दाख क्षेत्र तक फैला, इसमें राजा गुलाब सिंह का रणकौशल और नीतियाँ महत्वपूर्ण थीं और सन 1822 में राजा रणजीत सिंह ने गुलाब सिंह को (जो राजा रणजीत सिंह के सबसे ज्यादा विश्वासपात्र अधिकारी थे) जम्मू का राजा घोषित किया। राजा गुलाब सिंह ने जम्मू में डोगरा साम्राज्य स्थापित किया, डोगरा क्षत्रिय थे।

राजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद गुलाब सिंह के दो बेटों ने सिक्ख अधिकृत भाग पर हमला किया, दोनों बेटे युद्ध में मारे गये, गुलाब सिंह के सबसे छोटे बेटे की हत्या उसके चचेरे भाई हीरा सिंह ने की जो सिक्ख शासन के विश्वासपात्र थे और सिक्ख साम्राज्य में प्रधानमंत्री के पद पर आसीन थे। गुलाब सिंह ने ही हीरा सिंह को सिक्ख दरबार में प्रवेश दिलवाया था ताकि हीरा सिंह को कश्मीर का शासक बनाया जा सके और डोगरा साम्राज्य पूरे जम्मू–कश्मीर–लद्दाख क्षेत्र में फ़ैल जाए लेकिन हीरा सिंह की अतिमहत्वाकांशा ने गुलाब सिंह की योजना सफल नहीं होने दी, परिणामस्वरूप गुलाब सिंह के तीनों बेटे मारे गये। सिक्ख हीरा सिंह की चाल समझ गये थे और जब हीरा सिंह ने सिक्ख राजा शेर सिंह के खिलाफ बगावत करी, तब उन्हें मार दिया गया।[10]

धीरे धीरे गुलाब सिंह ने सिक्ख राजाओं की कमजोरी का फायदा उठा के डोगरा साम्राज्य को पूरे कश्मीर तक फैला दिया, इसका प्रमुख कारण था सन 1845 में सिक्ख शासन और ब्रिटिश सैनिकों के मध्य युद्ध, राजा गुलाब सिंह 1846 तक इस युद्ध से अलग रहे। सनद रहे राजा गुलाब सिंह और लाल सिंह (जो सिक्ख सेना के साथ थे), ने मिलकर सिक्ख पराजय सुनिश्चित करी ताकि डोगरा वंश का शासन स्थापित किया जा सके। ब्रिटिश–सिक्ख युद्ध के बाद गुलाब सिंह ने संधि का प्रस्ताव रखा, इस संधि के तहत ब्रिटिशर्स ने राजा गुलाब सिंह को पूरे क्षेत्र का शासक घोषित किया और राजा गुलाब सिंह ने ब्रिटिश द्वारा जीती हुई जमीन को 75 लाख रुपए अदा करके वापस खरीदा। इस संधि को अमृतसर की संधि के नाम से जाना जाता है, जो सन 1846 में हुई। इसी संधि में डोगरा राजा ने ये प्रावधान करवाया के कश्मीर से बाहर का कोई भी व्यक्ति कश्मीर की जमीन को नहीं खरीद सकता और इसी वंश के आखिरी राजा हरी सिंह ने कश्मीरी लड़की का किसी दूसरे राज्य के लडके से शादी करने पर प्रतिबन्ध लगाया। वहीं दूसरी लाहौर की संधि, जो इसी वर्ष ब्रिटिश और हारे हुए सिक्ख राजा के मध्य हुई, ने सिक्ख शासन का अंत किया और गुलाब सिंह को पूरे कश्मीर का राजा घोषित किया। डोगरा वंश ने पुनः हिन्दू राज्य की स्थापना करि और 1846 से 1952 तक पूरे कश्मीर क्षेत्र पर शासन किया। इस वंश के आखिरी राजा हरी सिंह हुए।[11]

इस दौर में जिसे प्राचीन एवं मध्यकालीन कश्मीर कहा जाता है, आम लोग कहाँ थे, वो क्या कर रहे थे? प्रमुख सवाल यहाँ ये आता है के हिन्दू बहुल कश्मीर बुद्धिज़्म और बाद में इस्लाम से कैसे और क्यों प्रभावित हुआ। इसका जवाब हिन्दू धर्म के चार वर्ण व्यवस्था में है। प्राचीन कश्मीर में जब बुद्धिज़्म फैला तब लाखों हिन्दुओं ने चार वर्ण व्यवस्था के खिलाफ बुद्ध धर्म अपनाया, जिसमें लद्दाख का एरिया बुद्धिज़्म का प्रमुख केंद्र बना। मध्यकालीन कश्मीर में और शाह मीर के शासन काल में कई ब्राह्मण, राजपूत, दलित वर्ग ने इस्लाम कुबूल किया। ब्राह्मण–राजपूत सत्ता के नजदीक या सत्ता में रहना चाहते थे इसलिए इस्लाम की तरफ आकर्षित हुए और दलित उस दौर में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उत्पीड़न के कारण इस्लाम की ओर आकर्षित हुए, हालाँकि ये भी एक तथ्य है के इस्लाम अपनाने के बाद भी इनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ और उत्पीड़न जारी रहा। ये वर्ग इस्लाम अपनाने से पूर्व खेतिहर मजदूर थे और इस्लाम अपनाने के पश्चात् भी खेतिहर मजदूर ही रहे जहाँ इन्हें जमीनों पर मजदूर या बंधुआ मजदूर बना के काम करवाया जाता था, इसमें कभी उन्हें मेहनताना दिया जाता था कभी जबरन काम करवाया जाता था और कई बार मेहनताना भी नहीं दिया जाता

था। राजनैतिक व्यवस्था तो फिर भी कभी कभी ही डावाडोल हुई, लेकिन कश्मीर की सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से शोषण, असमान और अत्याचारी थी, जिसमे वर्चस्व वाली जातियां कमजोर जातियों पर जुल्म किया करती थीं। जब लाखों लोग इस्लाम को अपनाये तब भी ये सामाजिक व्यवस्था नहीं बदली, वो इस्लाम या बौद्ध बनने के बाद भी खेतिहर मजदूर ही रहे और दुर्रानी शासन, सिक्ख शासन मुग़ल शासन में टैक्स के रूप में मोटी रकम अदा करते रहे। एक छोटे से मुस्लिम और सिक्ख अभिजन ने इस बड़ी जनसंख्या पर आर्थिक एवं राजनीतिक शासन कायम किया।[12]

हिन्दू शासन और कश्मीर

राजा गुलाब सिंह के बाद राजा रणवीर सिंह कश्मीर रियासत के शासक बने। इन्हीं के शासन में 1857 की क्रांति हुई जो ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की अनैतिक विस्तारवादी नीति के विरुद्ध थी और जिसे भारत को ब्रिटिश मुक्त करने के लिए पहले स्वतंत्रता संग्राम के रूप में कई विचारकों द्वारा प्रस्तुत किया गया। राजा रणवीर सिंह आजादी की इस पहली लड़ाई में भारत के अन्य राज्यों के साथ नहीं थे वरन अंग्रजी सेना के साथ थे और राजा की सेना ब्रिटिश सेना के साथ भारत के अन्य राजाओं के विरुद्ध युद्ध कर रही थी।[13]

राजा रणवीर सिंह के बाद राजा प्रताप सिंह कश्मीर के शासक घोषित हुए, जिन्होंने 1885 से 1925 तक कश्मीर पर शासन किया, इनके बाद हरी सिंह गद्दी पर बैठे। राजा प्रताप सिंह और हरी सिंह का शासन अंग्रेजी रियासत के रूप में किसी बड़े आन्दोलन में कभी हिस्सेदार नहीं रहा, देश की बाकी रियासतों की तरह कश्मीरी शासक भी स्वतंत्रता आन्दोलन से अपने आप को अलग रखे। लेकिन कश्मीर में कई तरह के आन्दोलन हुए। कश्मीरी पंडितों का कश्मीर की 30 प्रतिशत जमीन पर मालिकाना हक़ था जो महाराजा रणवीर सिंह के सन 1862 में चकदारी कानून लागू होने के बाद और बढ़ गया। दूसरी ओर कश्मीर में डोगरा शासक रणवीर सिंह ने टैक्स को और ज्यादा बढ़ा दिया। रणवीर सिंह को कश्मीरी मुस्लिम्स द्वारा बगावत का अंदेशा था और इसलिए उन्होंने अतिरिक्त कर लगाया ताकि कश्मीरी मुस्लिम्स राज्य और राजा के विरुद्ध षड्यंत्र को अंजाम ना दे पाएं और इस कदम का सबसे ज्यादा नकारात्मक प्रभाव कश्मीर के शाल व्यवसाय में लगे छोटे–बड़े मुस्लिम व्यापारियों पर पड़ा। कश्मीर में टैक्स और इस वजह से बढ़ते हुए घाटे की वजह से मुस्लिम व्यापारियों ने घाटी में सन 1865 में राजा की नीतियों के खिलाफ पहला आन्दोलन किया। मुस्लिम शाल व्यापारीयों का आंदोलन वास्तव में घाटे और टैक्स के नाम पर हिन्दू राजा के विरुद्ध एक षड्यंत्र का परिणाम था और मुस्लिम व्यापारियों ने शाल विभाग के अधिकारी श्री राज काक धर के घर पर धरना दिया और विरोध प्रदर्शन किया। राज काक धर एक कश्मीरी पंडित थे। ये विरोध प्रदर्शन हिंसक रूप लिया और इसी वजह से तात्कालिक कश्मीर के गवर्नर कृ पा राम ने इस आन्दोलन को कुचलने के लिए कोलोनेल बिजोय सिंह के नेतृत्व में डोगरा राजा की सेना भेजी। डोगरा सेना ने धरने पर बैठे व्यापारियों को तितर बितर करने के लिए और आन्दोलन को कुचलने के लिए कई राउंड गोलियां चलाई, जिससे सरकारी आकड़ें के मुताबिक 28 प्रदर्शनकारी मारे गये और 100 से ज्यादा घायल हुए। इस घटना के बाद हजारों मुस्लिम शाल व्यापारियों और कर्मकारों को कश्मीर से भगा दिया गया और उन्होंने पंजाब (इस पंजाब में फैसलाबाद, गुजरावाला, गुजरात, झेलम, लाहौर, मुल्तान, ननकाना साहिब, रावलपिंडी इत्यादि क्षेत्र शामिल थे जो अब पाकिस्तान में हैं) में शरण ली। सन 1920 में ये आन्दोलन दुबारा हुआ, सिल्क फैक्ट्री के कामगारों ने राजा के खिलाफ आन्दोलन किया इसका उद्देश वेतन में बढ़ोतरी था। चार साल बाद सन 1924 में यही आन्दोलन एक बड़े स्तर पर हुआ, कश्मीर में व्यापार के नाम पर हिन्दू शासक के विरुद्ध धीरे धीरे दुर्भावना बढ़ रही थी और कई मुस्लिम नेता इस स्थिति का फायदा उठाने में लग गए।[14]

ये दौर मुस्लिम आंदोलनों और हिन्दू राजा हरि सिंह के विरोध के दौर के रूप में जाना जाता है। वर्ष 1931 में कई आन्दोलन हुए जो राजा हरी सिंह के शासन के खिलाफ थे, ये आन्दोलन व्यापारी वर्ग, छात्रों द्वारा किये गये थे। मांग वही पुरानी थी, जिनमे वेतन, टैक्स का मुद्दा प्रमुख था और इसी के साथ कश्मीरी छात्रों ने एक नये आन्दोलन की शुरुआत की, जिसमे मुस्लिम्स को शिक्षण संस्थानों में प्रवेश, बेहतर शिक्षण माहौल, और प्रशासन में मुस्लिम भागीदारी सुनिश्चित करने की मांग रखी, उद्देश्य राजा और कश्मीर राज्य को अस्थिर करना था।

सन 1931 में इन सभी घटनाओं के कारण मुस्लिम ने एक बड़ा आन्दोलन डोगरा राजा हरी सिंह के खिलाफ किया, इस आन्दोलन को शुरू करने के लिए पहली बार मुस्लिम उलेमा सामने आए, और डोगरा शासन को मुस्लिम विरोधी घोषित किया। जुलाई 1931 में अब्दुल कय्याम, जो एक नॉन–कश्मीरी थे, उन्हें आन्दोलन करने के लिए प्रेरित करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया, बाद में अफवाह उडी के उन्हें गोली मार दी गई है। इस बात का मुस्लिम उलेमाओं ने भरपूर प्रयोग किया और मुस्लिम्स को हिन्दू राजा के विरुद्ध आंदोलन करने और हिन्दुओं के विरुद्ध संगठित होने के लिए प्रेरित किया, नतीजन मुस्लिम्स के मध्य हिन्दुओं के प्रति रोष बढ़ गया और कश्मीर में हिन्दुओं के विरुद्ध पहला दंगा हुआ जिसमें कई हिन्दुओं ने अपनी जान गवाई। मुस्लिम उलेमाओं ने इस आन्दोलन और दंगे को एक धर्म युद्ध की संज्ञा दी जो हिन्दू डोगरा राजा और हिन्दू जनसंख्या के विरुद्ध था। यहाँ ब्रिटिश ने हस्तक्षेप किया और राजा हरी सिंह को कश्मीरी मुस्लिम्स की मांगों पर ध्यान देने का आदेश दिया, इस आदेश के बाद हरी सिंह ने गेलेन्सी आयोग की स्थापना करी ताकि मुस्लिम्स की मांगों को पूरा किया जा सके, इस आयोग का पुरजोर विरोध कश्मीरी पंडितों ने किया क्योंकि इससे उनका जमीन पर वर्चस्व खत्म या कम होने का खतरा था और ये गेलेन्सी आयोग मुस्लिम उलेमाओं को ज्यादा अधिकार देने की वकालत करता था।[15]

इस आयोग की सिफारिशें मानते हुए राजा हरी सिंह ने कश्मीर में प्रजातान्त्रिक प्रणाली को लागू किया, और जनता के लिए एक 'प्रजा सभा' (विधान सभा की तरह लेकिन शक्ति विहीन) की स्थापना करी। इस योजना के तहत राजा हरी सिंह ने सभी कश्मीरियों को अपना राजनैतिक समूह या दल बनाने का भी अधिकार दिया। हालाकि ये योजना सिर्फ नाम की साबित हुई, क्योंकि इस दंतविहीन प्रजा सभा में अपना प्रतिनिधि चुनने के लिए सिर्फ 5 प्रतिशत कश्मीरी जनसँख्या को ही वोट देने का अधिकार दिया गया। इस 5 प्रतिशत जनसँख्या में मुस्लिम, हिन्दू, सिक्ख, बौद्ध सभी शामिल थे। मुस्लिम्स ने इस फरमान का फायदा उठाया और और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न राजनैतिक समूह बनाये, इन समूहों

में अखिल जम्मू–कश्मीर मुस्लिम कोन्फेरेंस (All Jammu and Kashmir Muslim Conference) प्रमुख थी (यहाँ से लेख में सिर्फ कोन्फेरेंस लिखा जायेगा)। इसकी स्थापना सन 1932 में हुई।[16]

कोन्फेरेंस ने मुस्लिम्स की मांगों को उठाया जिनमें जमीन पर अधिकार, प्रशासनिक सेवा में मुस्लिम्स को अवसर, मजदूरों की स्थिति में सुधार एवं उनका वेतन बढ़ाना, टैक्स को न्यायोचित बनाना इत्यादि शामिल थे। कोन्फेरेंस की स्थापना में शेख अब्दुल्लाह का बड़ा हाथ था, शेख अब्दुल्लाह कांग्रेस समर्थक माने जाते थे और कश्मीर में भी ब्रिटिश शासन के खिलाफ आजादी की लड़ाई का समर्थन करते थे। इनमे मौलाना सईद मसूदी, गुलाम मुहम्मद बक्शी और शेख अब्दुल्लाह प्रमुख थे जो इस कोन्फेरेंस के जरिए डोगरा राज का अंत करके ब्रिटिश संवैधानिक राज्य बनाना चाहते थे और सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार के जरिए सत्ता हासिल करना चाहते थे। कोन्फेरेंस ने अमृतसर की संधि जो अग्रेजों और राजा गुलाब सिंह के मध्य मार्च 1846 को हुई थी उसको खत्म करने के लिए भी आवाज उठाई। इसमें एक तबका सिर्फ मुस्लिम्स की बात करता था और उन्हीं की आवाज बनना चाहता था।[17]

सन 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ, इसी युद्ध काल के समय सन 1941 में कोन्फेरेंस दो भागों में बंट गई, एक तबका कोन्फेरेंस के सार्वभौमिक व्यस्क मतदान के आधार पर चुनावों और सत्ता प्राप्ति पर अड़ा रहा जबकि दूसरा तबका कोन्फेरेंस को सिर्फ मुस्लिम्स पहचान की राजनीति के लिए प्रयोग करना चाहता था। दूसरा तबका मुख्यतः मुज्जफराबाद, पूँछ,और मीरपुर इलाके से सम्बद्ध था जो पंजाबी मुस्लिम्स की नीतियों से आकर्षित था (अविभाजित पंजाब), इस तबके के लीडर चौधरी गुलाम अब्बास ने सन 1941 में कोन्फेरेंस से अपने को अलग किया और मुस्लिम कोन्फेरेंस को पुनः स्थापित किया, इस तबके ने मुस्लिम राज्य और इस्लामिक कानून की वकालत करी और जिन्नाह के पाकिस्तान मसौदे का समर्थन सन 1941 में ही कर दिया। जबकि नेशनल कोन्फेरेंस ने कश्मीर की आजादी के लिए अंग्रेजों के और राजा हरी सिंह के खिलाफ कई आन्दोलन चलाये। सन 1944 में नेशनल कोन्फेरेंस ने अपने मेनिफेस्टो में कश्मीर के सामाजिक, आर्थिक पुनर्निर्माण की मांग रखी और सत्ता में अपनी भागेदारी सुनिश्चित करनी चाही। कुल मिलाकर ये कहा जा सकता है के पहला मुस्लिम तबका सीधे पाकिस्तान का समर्थन कर रहा था वहीं दूसरी ओर मुस्लिम्स का दूसरा तबका आज़ाद कश्मीर में मुस्लिम शासन चाहता था।

इसी बीच मुस्लिम कोन्फेरेंस और चौधरी गुलाम अब्बास मुस्लिम लीग की अलग मुस्लिम राष्ट्र की मांग का पुरजोर समर्थन करने लगे, राजा हरी सिंह के लिए दोनों ही आन्दोलन खतरे की घंटी थे। सन 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध खत्म हुआ और जो कश्मीरी सैनिक राजा की तरफ से ब्रिटिश सेना के साथ लड़े, उनमे से मुस्लिम सैनिकों को राजा हरी सिंह ने सेना में वापस लेने पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि राजा हरी सिंह नेशनल कोन्फेरेंस की आजादी की लड़ाई को समर्थन देने और मुस्लिम कोन्फेरेंस का मुस्लिम राज्य की मांग का समर्थन करने से ये शक हुआ के राज्य की मुस्लिम राजनीती उन्हें सत्ता से अपदस्त ना कर दे।[18]

सन 1946 में कश्मीर छोड़ो आन्दोलन नेशनल कोन्फेरेंस ने शुरू किया, इसी समय नेशनल कोन्फेरेंस ने राजा का शासन खत्म करने के लिए टैक्स ना देने का एलान किया, इसके अतिरिक्त हिन्दू रियासत खत्म हो और अमृतसर की संधि रद्द की जाए, इत्यादि कुछ अन्य मांगे थीं। इन मांगों को मुस्लिम कोन्फेरेंस ने भी समर्थन दिया और पूँछ में छव ज॰ ब्ंउचंपहद शुरू हुआ। राजा हरी सिंह ने अपने मुस्लिम सैनिकों को हथियार जमा कराने का आदेश दिया और आम मुस्लिम जनता को भी हथियार ना रखने का फरमान जारी किया, परिणामस्वरूप आम मुस्लिम जनता के पास जो भी हथियार थे वो राजा के पास जमा हो गये।

सन 1946 में नेशनल कोन्फेरेंस और मुस्लिम कोन्फेरेंस के मेम्बर्स को जेल में डाला गया और इसी वर्ष कश्मीर की विधान सभा कही जाने वाली "प्रजा सभा' के लिए चुनाव घोषित किये गये, इन चुनावों का नेशनल कोन्फेरेंस (जो सारभौमिक व्यस्क मताधिकार के आधार पर चुनावों का समर्थन करती आ रही थी) ने पूर्ण बहिष्कार किया। लेकिन मुस्लिम कोन्फेरेंस (जो पहचान की राजनीती के जरिए मुस्लिम समुदाय का ध्रुवीकरण कर रही थी, पाकिस्तान की मांग की समर्थक और चुनाव विरोधी थी) ने चुनाव में हिस्सा लिया, वोट प्रतिशत ना के बराबर था और क्युकी सिर्फ मुस्लिम कोन्फेरेंस ही चुनाव लड़ रही थी इसलिए 21 में से 16 सीट पर जीत हासिल करी। इस चुनाव के अगले साल सन 1947 में भारत की आजादी का मसौदा तैयार हुआ।

नेशनल कोन्फेरेंस पूरे जम्मू, कश्मीर, लद्दाख क्षेत्र का भारत में विलय, राजा के शासन का अंत, अमृतसर की संधि का खात्मा और राजा हरी सिंह के नये फरमान जिसमे कश्मीर की लड़की को बाहरी व्यक्ति से शादी करने पर प्रतिबंध लगाया गया था, का पूरी तरह से खात्मा चाहती थी और इसके लिए नेशनल कोन्फेरेंस के लीडर शेख अब्दुल्लाह ने कांग्रेस और नेहरु से सम्पर्क साधा।

इसी समय राजा हरी सिंह ने मुस्लिम कोन्फेरेंस और जम्मू एंड कश्मीर राज्य हिन्दू सभा की बात मानते हुए कश्मीर को माउंट बेटन योजना के तहत आजाद मुल्क घोषित किया। राजा खुद एक अलग स्वतंत्र कश्मीरी राज्य का पक्षधर था। लेकिन कश्मीर में शेख अब्दुल्लाह और उनकी नेशनल कोन्फेरेंस उम्मीद से ज्यादा लोकप्रिय निकली और घाटी के हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध ने नेशनल कोन्फेरेंस का समर्थन किया और और इसी समय शेख अब्दुल्लाह ने भारत में विलय की नई मांग उठाई। राजा हरि सिंह की नीति जनता का झुकाव समझ पाने में असफल रही, और अंततः स्वयं राजा और जम्मू कश्मीर हिन्दू सभा मुस्लिम कांफ्रेंस के जाल में फंस कर कश्मीर की राजनीति में सन 1947 के दौर में अलग थलग पड़ गये।

कुछ समय बाद, पाकिस्तान की सेना ने कबाइलियों के भेष में कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। राजा हरी सिंह ने भारत से मदद मांगी और भारत सशर्त मदद करने को तैयार हुआ, इसमें कश्मीर का भारत में विलय सुनिश्चित हुआ और शेख अब्दुल्लाह को नेहरु और हरी सिंह ने कश्मीर का प्रधानमंत्री घोषित किया।[19] इस तरह शेख अब्दुल्लाह का सत्ता प्राप्ति का स्वप्न साकार हुआ और वो अपने दल को जम्मू–कश्मीर में चिरस्थायी एवं मजबूत बनाने में लग गए।

शेख अब्दुल्लाह ने ही धारा 370 को अमली जामा पहनाया और कश्मीर की स्वायत्ता पर जोर दिया, राजा हरी सिंह अमृतसर की संधि (जमीन ना खरीदने वाला मसौदा) और कश्मीरी लड़की का किसी दूसरे राज्य के व्यक्ति से विवाह पर प्रतिबंध को नहीं हटाना चाहते थे। ये दोनों ही मुद्दे सिर्फ जमीन पर मालिकाना हक़ से जुड़े थे। अतः नेहरु, पटेल और शेख अब्दुल्लाह के प्रयासों से कश्मीर का भारत में विलय हुआ जिसमे भारत के पास सिर्फ रक्षा, विदेश मामले, वित्त और

संचार जैसे ही मुद्दे आये, कश्मीर के निजी मामलों में भारत को अहस्तक्षेप की नीति अपनानी थी। लेकिन साथ ही साथ आर्टिकल 370 में ये प्रावधान भी रखा गया के भारत का राष्ट्रपति कश्मीर की संविधान सभा से परामर्श करके कश्मीर के मामलों में हस्तक्षेप कर सकता/सकती है।[20]

यही वो प्रावधान था जिस वजह से कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा होते हुए भी एक अलग विशिष्ट राज्य का दर्जा लिए हुए था। इसी धारा 370 के कारण कश्मीर में अलगाववाद चरम पर पहुँच चुका था एवं भारत विरोधी गतिविधियों को संरक्षण देने का कार्य फलने फूलने लगा।

एक सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर से भी पर्दा उठाना जरूरी है, इस मुद्दे को लेकर भी समाज में कई भ्रांतियाँ हैं, ये मुद्दा है कश्मीरी पंडितों का मुद्दा। किसी को एक पल में उसके घर से बेघर कर देने का दर्द कश्मीरी पंडितों से ज्यादा किसी ने शायद ही अनुभव किया हो। वो दौर जो 80 के दशक का अंत और 90 के दशक के अंत तक चला, त्रासदी, दुख, अवसाद से भरा था जहां आतंकवादियों ने कश्मीरी पंडितों को घाटी से भगाया, अत्याचार किया, मार काट करी। आज तक कश्मीरी पंडितों को वापस घाटी मे बसाने के लिए किसी भी सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया। 80 के दशक के अंत का दौर और 90 के दशक तक पूरा भारत उथल पुथल के दौर से गुजर रहा था। मण्डल कमिशन, भूमंडलीकरण, जाति आधारित दंगे, आरक्षण के खिलाफ दंगे, देश की जर्जर अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी, महंगाई इत्यादि भारत के सामने एक बड़ी चुनौती के रूप में खड़े थे। कश्मीर भी अछूता नहीं था, वहाँ आतंकवाद ने नए सिरे से सर उठाना शुरू किया। हालांकि कश्मीर में आतंकवाद 60 और 70 के दशक मे अल फतह नाम के संगठन ने शुरू करने की कोशिश करी लेकिन अल फतह सफल नहीं हुआ। आतंकवाद को कश्मीर में उपजाऊ जमीन 80 के दशक में मिली। जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (कश्मीर का एक आतंकवादी संगठन) ने कश्मीर में आजादी का नारा दिया और कश्मीरी पंडितों को घाटी से निकाला गया। उस समय केंद्र में विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार थी।

यहाँ श्री जगमोहन का उल्लेख करना महत्वपूर्ण है। सन 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने श्री जगमोहन को मिलने के लिए बुलाया, उस दौर में सिक्ख अलगाववाद चरम पर था और श्री जगमोहन यही सोचकर मिलने गए के उन्हें पंजाब से संबंधित कोई जिम्मेदारी दी जा सकती है, लेकिन श्रीमती गांधी ने उन्हें कश्मीर की स्थिति को सम्हालने का कार्य सौंपा। श्रीमती गांधी ने जगमोहन से कहा के वो कश्मीर को दूसरा पंजाब बनते नहीं देखना चाहतीं।[21] इसी समय अक्टूबर 1984 में श्रीमती गांधी की हत्या कर दी जाती है। राजीव गांधी देश के प्रधानमंत्री बनते हैं और अप्रैल 1984 में श्री जगमोहन को जम्मू कश्मीर का राजयपाल बनाया जाता है। श्रीमती गांधी की आशंका गलत नहीं थी और जगमोहन ने बिगड़ते हुए कश्मीर के हालात पर राजीव गाँधी को कई पत्र लिखे और हस्तक्षेप की मांग करि। लेकिन तत्कालीन राजीव गाँधी की सरकार ने श्री जगमोहन की चेतावनियों पर कोई ध्यान नहीं दिया। इससे श्री जगमोहन व्यथित हुए और कांग्रेस पर मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीती का आरोप लगाते हुए आगाह किया के केंद्र सरकार की लापरवाही का नतीजा पूरा कश्मीर और कश्मीरी पंडित झेलेंगे।[22]

साल 1990 में विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार आती है, और इसी समय श्री जगमोहन को जम्मू कश्मीर से वापस बुलाया जाता है, ये कदम अदूरदर्शी था। श्री जगमोहन के रहने और उनकी नीतियों के कारण कश्मीर में आतंकवाद चाह कर भी आगे बढ़ नहीं पाया और पाकिस्तान के मंसूबों पर भी पानी फिरता रहा। श्री जगमोहन ने पाकिस्तान के मंसूबों पर कई बार पानी फेरा और इसी से चिढ़कर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो ने अपनी मुज्जफराबाद रैली में आजाद कश्मीर की मांग रखते हुए अपने उत्तेजक भाषण में भारत विरोधी बातें कहीं, भुट्टो ने वियतनाम, अफ़ग़ानिस्तान का उदाहरण देते हुए कहा के मुस्लिम को भारत के खिलाफ जंग छेड देनी चाहिए और जिहाद के लिए आह्वान किया। श्री जगमोहन के लिए भुट्टो ने कहा के मुस्लिम जैसे ही संगठित हो जाएंगे जगमोहन का जग जग मो मो हन हन हो जाएगा। पाकिस्तान और आतंकवादियों के इस तरह के ब्यान और कश्मीर में कुछ ना कर पाने की झुंझलाहट ये साबित करता है के श्री जगमोहन किस तरह चट्टान की तरह खड़े थे।[23]

श्री जगमोहन को विश्वनाथ सरकार ने सन 1990 में कश्मीर से वापस बुला लिया, सरकार का ये कदम कश्मीर के लिए घातक सिद्ध हुआ और जिस रात श्री जगमोहन वापस दिल्ली आने के लिए तैयार हो रहे थे उसी रात लोकल मुस्लिम्स के साथ आतंकवादियों ने कश्मीर की एक मस्जिद में मसौदा तैयार किया और अगले दिन (20 जनवरी 1990) को कश्मीरी पंडितों की हत्या, बलात्कार और पलायन शुरू हुआ। जो भी श्री जगमोहन पर आरोप लगाते हैं उन्हें उनके द्वारा श्री राजीव गाँधी को लिखे गए पत्र देखने चाहिए और साथ ही ये भी जानना चाहिए के जब तक वो कश्मीर में थे पाकिस्तान या आतंकवादियों या लोकल पाकिस्तान परस्त मुस्लिम्स को भारत विरोधी कार्य नहीं करने दिए।[24]

सन 1990 के बाद कई दाल सत्ता में आए, कांग्रेस पूरे 10 वर्ष शासन करि लेकिन कश्मीर की समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया और आए दिन जवानों पर हमले, आम जगहों पर आतंकवादी घटनाएं आम बातें रहीं। वर्तमान भारत सरकार ने धारा 370 के प्रावधानों को निर्जीव करते हुए अगस्त 2019 में कश्मीर को दो भागों में बांटा, प्रथम जम्मू और कश्मीर एवं द्वितीय लद्दाख क्षेत्र, इसमें जम्मू और कश्मीर को विधानसभा का प्रावधान किया गया और लद्दाख चंडीगढ़ की तरह एक केंद्र शासित क्षेत्र बनाया गया। ये प्रावधान लागू होने के बाद से कश्मीर में काफी सुधर देखने को मिला है और आतंकवादी अथवा अलगाववादी गतिविधियों में काफी कमी देखने को मिली है, वहीं दूसरी ओर जम्मू–कश्मीर क्षेत्र में राष्ट्रवाद की गूंज भी सुनाई दे रही है जिससे पाकिस्तान और आतंकवादियों या भारत विरोधी शक्तियों जैसे हुर्रियत कांफ्रेंस, पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी इत्यादि की देश विरोधी गतिविधियों में लगाम लगी है, उम्मीद कर सकते हैं के आने वाला समय कश्मीर को वापस धरती के स्वर्ग का दर्जा दिलाएगा।

संदर्भ सूची

1. Britannica, “The Editors of Encyclopaedia.”Kashmir". Encyclopedia Britannica, 24 Mar. 2021, Accessed Via: https://www.britannica.com/place/Kashmir-region-Indian-subcontinent. Dated. 2/4/2020.
2. Warder AK. Indian Buddhism. Motilal Banarsidass 2000, page 256. see also, Basham, A. L. (2001) The Wonder that was India New Delhi: Roopa & Co. Accessed Via: https://rarebo okso cietyofindia.org/book_archive/196174216674_10154892021366675.pdf. Dated. 11/11/2020.

3. Sen Sailendra Nath. Ancient Indian History and Civilization. New Age International, 1999, 295.
4. Prithivi Nath Kaul Banzai. Culture and Political History of Kashmir, M.D. Publications Pvt. Ltd, 1994.
5. Hasan. Mohibbul Kashmir under the Sultans. Aakar Books, 1959.
6. Ibid. see also, Krishnan Revathi PSA Dossier Calls Mehbooba Mufti Kota Rani, Kashmir's Hindu Queen who 'Poisoned' Rivals", The Print, 2020, 38. Accessed Via: https://theprint.in/politics/psa-dossier-calls-mehbooba-mufti-kota-rani-kashmirs-hindu-queen-who-poisoned-rivals/362492/. Dated. 11/11/2020.
7. Zutshi NK. Sultan Zain-ul-Abidin of Kashmir: An Age of Enlightenment. Nupur Prakashan. 1976. pp. 6–7. see also, Sharma. R.S. A Comprehensive History of India. Orient Longmans. 1992, 628. see also, Carlos Ramirez-Faria. Concise Encyclopedia of World History. Atlantic Publications. 2007, 412 and for Mughal rule, please see, Snedden, Christopher. Understanding Kashmir and Kashmiris. Oxford University Press, 2015, 29.
8. Zutshi Chitralekha. Language of Belonging: Islam, Regional Identity and the Making of Kashmir. C. Hurst & Co. Publishers, 2004, 35.
9. Imperial Gazetteer of India, volume 15. 1908. "Kashmir: History". pp. 94–95. Scofield. Victoria. Kashmir in Conflict. London and New York: I. B. Taurus & Co. 2003. p. 5-6. for Sikh atrocity in Kashmir, see, Madan. T.N, "Kashmir, Kashmiris, Kashmiriyat: An Introductory Essay", in Rao, Aparna (ed.), The Valley of Kashmir: The Making and Unmaking of a Composite Culture? 2008. pp. 1–36. Zutshi, Chitralekha. Language of Belonging: Islam, Regional Idenity and the Making of Kashmir, C. Hurst & Co. Publishers, 2004.
10. Singh Harbans. "Dogra Rulers and their Run-ins with China," The Tribune. June. 21. 2020. Accessed Via: https://www.tribuneindia.com/news/features/dogras-and-their-run-ins-with-china-102073. Dated. 12/11/2020.
11. Ibid. see also, Nalwa, V. Hari Singh Nalwa-Champion of the Khalsaji. New Delhi: Manohar, 2009, 220.
12. Cited in "Talbot, Ian; Singh, Gurharpal The Partition of India, Cambridge University Press, 2009, 18-206.
13. Schofield, Victoria. Kashmir in Conflict: India, Pakistan and the Unending War. I. B. Tauris, 2010.
14. Iqbal Singh Sevea. The Political Philosophy of Muhammad Iqbal: Islam and Nationalism in Late Colonial India. Cambridge University Press, 2012, 16.
15. Talbot Ian, Singh Gurharpal. The Partition of India, Cambridge University Press, 2009, 18-206.
16. Butt Qaiser. "Bridfing Gaps: Efforts Underway to Mend PML-N-Muslim Conference Ties," The Express Tribune, 2013. Accesed Via: https://tribune.com.pk/story/563462/bridging-gaps-efforts-under-way-to-mend-pml-n-muslim-conference-ties. Dated. 15/11/2020
17. Ibid.
18. "All Jammu & Kashmir Muslim Conference" Accessed Via: https://web.archive.org/web/20170705020412/http://muslimconference.org.pk/pages.php?name=history. Dated. 25/11/2020.
19. Stein. B. A History of India (1st Edition). Oxford: Wiley-Blackwell. 1998.
20. Sheikh Abdullah. Flames of the Chinar: An Autobiography. New Delhi. Vikings, 1993, 97.
21. Rahul Pandita. "The Jagmohan Myth," OPEN (April. 15). Accessed, 2022. Via: https://openthemagazine.com/cover-stories/the-jagmohan-myth/. Dated. 9/5/2022. See also, Tarun Vijay (2021), "Jagmohan: The Lion who saved Kashmir and Hindus," Times of India (May-5). Accessed Via: https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/indus-calling/jagmohan-the-lion-who-saved-kashmir-and-the-hindus/. Dated. 9/5/2922.
22. Ibid.
23. Ibid.
24. Ibid.